SJIF Impact Factor - 5.67 E- ISSN 2582-5429

AKSHARA

Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
January 2023 Special Issue 07 Volume III (A)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आज़ादी के 75 वर्ष का हिंदी साहित्य

अतिथि संपादक

प्रोफेसर रजनी शिखरे

प्राचार्य

र. भ. अट्टल कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय गेवराई

जि. बीड महाराष्ट्र

कार्यकारी संपादक

डॉ. गजानन चव्हाण
प्रधान सचिव
महाराष्ट्र हिंदी परिषद

प्रो.डॉ.जिजाबराव पाटील
अध्यक्ष
महाराष्ट्र हिंदी परिषद

प्रा.संतोष नागरे
हिंदी विभागाध्यक्ष
र. भ. अट्टल महाविद्यालय गेवराई

Chief Editor : **Dr. Girish S. Koli**, AMRJ

For Details Visit To - www.aimrj.com

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
January 2023 Special Issue 07 Volume III (A) SJIF Impact- 5.67

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

January 2023

Special Issue 07 Volume III (A)

आज़ादी के 75 वर्ष का हिंदी साहित्य

अतिथि संपादक
प्रोफेसर रजनी शिखरे
प्राचार्य
र. भ. अट्टल कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय गेवराई जि. बीड महाराष्ट्र

AMRJ

कार्यकारी संपादक

डॉ. गजानन चव्हाण	प्रो.डॉ.जिजाबराव पाटील	प्रा.संतोष नागरे
प्रधान सचिव	अध्यक्ष	हिंदी विभागाध्यक्ष
महाराष्ट्र हिंदी परिषद	महाराष्ट्र हिंदी परिषद	र. भ. अट्टल महाविद्यालय गेवराई

Akshara Publication
Plot No 143 Professors colony,
Near Biyani School, Jamner Road, Bhusawal Dist Jalgaon Maharashtra 425201

E- ISSN 2582-5429

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal

January 2023 Special Issue 07 Volume III (A) SJIF Impact- 5.67

Editorial Board

-: Chief & Executive Editor:-

Dr. Girish Shalik Koli

Dongar Kathora

Tal.Yawal, Dist. Jalgaon [M. S.] India Pin Code: 425301

Mobile No: 09421682612

Website:www.aimrj.com Email:aimrj18@gmail.com

-:Co-Editors :-

- **Dr. Sirojiddin Nurmatov,** Associate Professor, Tashkent Institute Of Oriental Studies, Tashkent City, Republic Of Uzbekistan
- **Dr.Vivek Mani Tripathi**, *Assistant Professor*, Faculty of Afro – Asian Languages and Cultures, Guangdong University of Foreign Studies, Guangzhou, Guangdong, China
- **Dr.Maxim Demchenko** Associate Professor Moscow State Linguistic University, Institute Of International Relationships, Moscow,Russia
- **Dr.Mohammed Abdraboo Ahmed Hasan,** Assistance Professor (English) The Republic of Yemen University of Abyan General manager of Educational affairs in University of Abyan ,Yemen.
- **Dr. Vijay Eknath Sonje,** *Assistant Professor* (Hindi) D. N. College, Faizpur [M. S.]
- **Mr. Nilesh SamadhanGuruchal,** *Assistant Professor* (English)Smt. P. K. Kotecha Mahila Mahavidyalaya, Bhusawal, Dist. Jalgaon [M. S.] India.
- **Dr. Shaikh Aafaq Anjum,** *Assistant Professor* (Urdu) Nutan Maratha College, Jalgaon. [M. S.] India.
- **Mr. Dipak Santosh Pawar,** *Assistant Professor* (Marathi)Dr. A.G.D. Bendale Mahila Mahavidyalya, Jalgaon [M. S.] India.

PEER REVIEW POLICY

AMRJ will send a copy of research work to the editorial board. The board will verify the same according to the rules of research methodology. Then plagiarism in the work will be checked. In case if the research methodology is not followed properly by the researcher, message will be given to the researcher and he/she will be asked to revise the work in a stipulated period.

After checking research methodology and plagiarism, the work will be sent to the Peer Review Committee.

SINGLE BLIND PEER REVIEW BY EXPERT PEER REVIEWERS

AMRJ adopts the Single Blind Peer Review Method. After checking research methodology and plagiarism, the work will be sent to the Peer Review Committee for review through email. AMRJ do not disclose the details of researcher to Peer Review Committee. The Peer Review Table will be displayed online according to the criteria decided by the Editorial Board. After the approval by Peer Review Committee, the research work will be published in the Issue. In case if any instructions received from Peer Review Committee, the same will be forwarded to the researcher and he/she will be asked to clear the matter. Editorial Board of AMRJ will be the final authority to decide whether a research work is to be published or not.

AMRJ Disclaimer:

For the purity and authenticity of any statement or view expressed in any article. The concerned writers (of that article) will be held responsible. At any cost member of Akshara's editorial Board will not be responsible for anyconsequences arising from the exercise of Information contained in it.

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
January 2023 Special Issue 07 Volume III (A) SJIF Impact- 5.67

Index

Sr.No	Title of the Paper	Author's Name	Pg.No
1	'माझा प्रवास' का हिंदी अनुवाद	प्रोफेसर डॉ. अमोल पालकर	05
2	'मोहन दास' के बहाने आत्ममंथन	डॉ. विजय शिंदे	08
3	आप यहाँ है : संघर्ष और चेतना के विविध आयाम	प्रो.डॉ.विजयकुमार राऊत	12
4	समकालीन कवि ग.मा. मुक्तिबोध के काव्य पर मार्क्सवाद का प्रभाव	प्रा. डॉ. हनुमंत गायकवाड	16
5	आजादी के बाद की हिंदी कहानी: संवेदना के विविध आयाम	मुकुंदा निवृत्ती ठोंबरे डॉ. अनिल काळे	19
6	व्यंग्य साहित्य की विविधता और परसाई का लेखन	डॉ आभा सिंह	22
7	स्वतंत्र भारत के रंगमंचीय कलाकार का जीवन संघर्ष : काल कोठरी	प्रो.अशोक मर्डे	25
8	'लौटकर देखना' काव्य संग्रह में स्वतंत्र भारत का यथार्थ चित्रण'	कवि.प्रा.डॉ. देवीदास क.बामणे	28
9	आज़ादी के 75 साल : 'आदिवासी नहीं नाचेंगे'	डॉ. गजानन सुखदेव चव्हाण	36
10	भारतीय प्रवासी साहित्यकार सुनीता जैन की कहानियों में नारी अस्मिता की जमीन	डॉ.नवनाथ गाड़ेकर	40
11	समकालीन हिंदी कविता और राष्ट्रीयता (आजादी के 75 वर्ष का हिंदी काव्य)	डॉ.पंडित बन्ने	44
12	कुसुम अंसल के 'तापसी' उपन्यास में नारी विमर्श	डॉ. मेदिनी अंजनीकर	47
13	आजादी के 75 वर्ष का हिंदी कथा - साहित्य	प्रा.अनिता किसन पाटोळे	49
14	आजादी के बाद हिंदी साहित्य में व्यक्त वृध्द विमर्श	अविनाश मारुती कोल्हे डॉ. अनिल काले	51
15	वर्तमान भारत की राजनीति का कठोर वास्तव 'बकरी'	प्रो. (डॉ.) बबन चौरे	55
16	आजादी के 75 वर्ष और हिंदी कविता	प्रा. हंबीराव मारुती चौगले	57
17	निराला के काव्य में चित्रित प्रगतिवादी चेतना	प्रा.डॉ. संजय पिराजी चिंदगे	60
18	स्वाधीनता के सात दशक और नागार्जुन का साहित्य	डॉ. दिनेश प्रसाद साह	63
19	हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श	प्रा. डॉ. सविता कचरू लोंढे	69
20	पोस्ट बॉक्स नं.203 नाला सोपारा में अभिव्यक्त किन्नरों की समस्याएँ	डॉ.जी.बी.उषमवार	72
21	तसलीमा के कविताओं में मानवाधिकार	फड आशा वैजेनाथ प्रो.डॉ. लहाडे मुरलीधर अच्युतराव	74
22	आज़ादी के अमृत महोत्सव तक के बाल-साहित्य में डॉ. परशुराम शुक्ल का स्थान	डॉ. माधव राजप्पा मुंडकर	77
23	समकालीन हिंदी कविता में 'पर्यावरण' संचेतना	डॉ. मनोहर जमधाडे	81
24	परिवार विघटन का दस्तावेज – 'अश्क' के नाटकों के संदर्भ में	प्रो. महेमूद पटेल	84

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
January 2023 Special Issue 07 Volume III (A) SJIF Impact- 5.67

14

आजादी के बाद हिंदी साहित्य में व्यक्त वृध्द विमर्श

शोध छात्र
अविनाश मारुती कोल्हे

शोध निर्देशक
डॉ. अनिल काले
हिंदी विभाग, सावित्रीबाई
फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

प्रस्तावना :–

हम जानते है एक किसान ऋतु के अनुरूप ही अपने खेत में धान की पैदावार करता है। ठीक उसी तरह एक साहित्यकार भी तत्कालीन परिवेश से प्रभावित होकर साहित्य सृजन करता है। भारत देश काफी दिनों तक अंग्रेजों की गुलामी से आजादी के बाद हर दृष्टि से बदल रहा था। जिसका प्रभाव साहित्य सृजन पर भी दृष्टिगोचर होने लगा।

हिंदुस्थान आजाद होने से पूर्व परिस्थितियों में हिंदी साहित्यकारोंने तत्कालीन परिवेश पर आधारित साहित्य लिखा है। जो अधिकतर एय्यारी, मजदूर, किसान, आजादी, गुलामी, मनोरंजन, तिलस्म, आंदोलन आदि विषयों पर लिखा जा रहा था लेकिन, हिंदुस्तान में 1947 स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद परिवेश के बदलने से साहित्य लेखन के आयामों में भी परिवर्तन होने लगा। जिसमें स्वतंत्रता पूर्व लेखन विषयों के अलावा दलित चेतना, आदिवासी चेतना, किसान चेतना, रती चेतना, किन्नर विमर्श, प्रकृति विमर्श, तकनीकी विमर्श, बाल विमर्श तथा वृध्द विमर्श आदि विषयोंपर खुलकर सृजनात्मक साहित्य लिखा जाने लगा। इसमें से वृध्द विमर्श एक ऐसा विषय है, जो हर एक इंसान से संबंधित है फिर वह चाहे किसी जाति धर्म का हो, दलित हो, किन्नर हो या फिर आदिवासी। क्योंकि इनमें हर एक को अपने जीवन काल में समय की गति से वृध्द होना ही है। यह हमारे जीवन काल की अंतिम अवस्था मानी जाती है। वास्तव में इस अवस्था में अपना जीवन हंसी खुशी से बिताना चाहिए किंतु ऐसा होता नहीं। अधिकांश लोग वृध्दावस्था को जीवन की एक अवस्था न मानकर समस्या मानने की भूल कर बैठते हैं, जो बिलकुल गलत है। वृध्दावस्था हमारे जीवन का अंतिम पडाव अवश्य है किंतु वह कोई अंतिम क्षण नहीं है। हम इस अवस्था में भी सुखी जीवन बिता सकते हैं। इन्हीं सब बातों पर स्वातंत्र्योत्तर काल में हिंदी साहित्यकारों ने अधिक खुबकर बात की है। कहानीकार सत्यराज द्वारा लिखित कहानी 'अनधिकृत स्वप्न' एक वृध्द पिता के अहंकार पर भाष्य करती है। कहानी में कुंती को उसके पति किशनलाल ने कहा था कि अजय के पास भले ही कोठी, कार इज्जत हो तुम वहां मत जाओ पर माँ की ममता ने उसे विवश कर दिया और वह चली जाती है। कुंती पर पहला आघात तब होता है, जब अजय उसे स्टेशन लेने नहीं आता और नहीं घर के किसी नौकर को भेजता है। कुंती स्वयं ही घर पहूँच जाती है, जहां घर के नौकर लोग उनका स्वागत करते हैं। अपने बेटे और बहू को न देखकर दादीजी नौकरों से पूछती है, कि सब लोग कहां गए? तब नौकर बतरते हैं कि, साहबा मेम साहब और बच्चों को लेकर पिक्चर देखने गए हैं। थोडी देर में बेटा घर आने पर बहाना बनाते हुए कहता है कि, इंजीनियर साहब के साथ पिक्चर देखने जाना पडा, कुंती का बेटा अजय अपनी पत्नी रजनी के साथ माँ के चरण स्पर्श करता है। साथ ही स्टेशन न पहुंचेन पर माफी भी माँगता है। जिस पर कुंती बड़े दिन से माफ भी कर देती है। पोता बंटी और पोती वंदना दादी की गोद में जाकर बैठते हैं और पुछते हैं कि, दादाजी क्यों नहीं आए? तब दादी बच्चों को बताती है कि, उन्हें कुछ काम था वे बाद में आएंगे। दादी कहती है कि, मैंने उन्हें समझाने की बहुत कोशिश की किंतु वे न माने। दादी अर्थात कुंती अपने पति किशनलाल से कहती है कि, उम्र के इस दौर में मैं इस तरह की जिंदगी नहीं जी सकूंगी आज क्या नहीं है उसके पास.... कोठी, कार, समाज में इज्जत। सब कुछ तो है उसके पास। मैं तो अपने बेटे के पास जाऊंगी। किशनलाल चाहकर भी कुंती को रोक नही पाता कुंती जाते हुए कहती है– "हाँ, हाँ मैंने हमेशा अधूरे इंसान जैसा जीवन जिया है। (आज तक इस गृहस्थी में फसकर) संघर्षों में ही समय कटा है मेरा। आज जबकि कुछ सुख–शांति से जीवन काटने का समय आया है तो आप मुझे ऐसा करने से रोकना चाहते है।"[1]

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
January 2023 Special Issue 07 Volume III (A) SJIF Impact- 5.67

कुछ दिनों बाद कुंती को किशनलाल की बातों में सच्चाई नजर आने लगती है। कुंती का विश्वास था कि, उसका बेटा उसकी सेवा करेगा लेकिन समय की तेज धार में कुंती का विश्वास बह जाता है। जब डॉक्टर बताते है कि, कुंती को छूत का रोग लग गया है। तो बेटा और बहू दोनों का व्यवहार कुंती के प्रति बिलकुल बदल जाता है। इतना ही नहीं तो बहू बच्चों को भी दादी से दूर कर देती है। तब कुंती को पता चलता है कि, मेरा पति साथ होता तो यह नहीं होता।

वृध्दावस्था में व्यक्ति अधिकतर अतित में जीता है, उन्हीं चीजों को याद करता है जो उसने युवावस्था में अनुभव की थी। वह भावनात्मक रूप से कमजोर हो जाता है और उसने युवावस्था में किए हुए कामों की याद करता रहता है। जिसपर लोग भी उनके शारीरिक परिवर्तनों को देखकर वृध्द की युवावस्था से तुलना करने लगते हैं। भवगतीचरण वर्मा की कहानी 'पियारी' इस बात पर आधारीत दिखाई देती है। यह कहानी वृध्दावस्था में होनेवाले शारीरिक परिवर्तनों को नोट करती है। "मनोहर वहाँ सामने मोड़ पर बैठी उस बुढ़ियाँ भिखारिन को देखते हो न! न जाने क्यों बिना मेरी इच्छा के मेरी नजर उस पर ठहर जाती है। ऐसा मालूम होता है कि, मैं उसे जानता हूँ यही नहीं वह भी मुझे जानती है। लेकिन वह मुझे पहचानती, शायद इसीलिए कि, मुझमें अधिक परिवर्तन हो गया है। लेकिन उसमें भी बहुत अधिक परिवर्तन हुआ वह भयानक है।"[2] आशय यह है कि, वृध्दावस्था में होनेवाले बदलाव शरीर, रंग, रूप को पूरी तरह से बदल देते हैं यहां तक कि, उनके मस्तिष्क की संरचना भी बदल जाती है। याददाश काफी प्रभावित होती है। वृध्द लोग अपने परिचितों को या तो पहचान नहीं पाते या बहुत देर से पहचानते हैं।

प्रभा खेतान द्वारा लिखित 'आम का मौसम' कहानी वृध्द सेठानी भगवानी बाई के उपर लिखी गयी कहानी है। प्रस्तुत कहानी में वृध्द भगवानी बाई एक पतिव्रता नारी, मातृवत्सल नारी एवं एक आदर्श नारी के रूप में उभरकर सामने आती है।

प्रस्तुत कहानी की कथावस्तु सेठ रुकमादासजी से शुरु होती है, जो सेठानी भगवानी बाई के पति हैं। गर्मियों में वह बाजार जाते हैं और उनकी पत्नी के लिए आम लेकर आते हैं। वे अपने सर पर पसीना पोंछते हुए घर में प्रवेश करते हैं। पर उस समय उनकी पत्नी अपने पोते के लिए स्वेटर बुनती बैठी होती है पर उसकी बहू मना कर देती है। बहू के मना करने पर भी वह स्वेटर बुनती रहती हैं। यहां पर एक बूढ़ी माँ का अपने पोते के लिए प्यार और अपार स्नेह देखने को मिलता है। सेठ रुकमादासजी बाजार से आम खरीदकर आ गए हैं और वह अपनी बुढी पत्नी भगवानी को खाने के लिए एक बड़ा सा आम देते है पर वह कहती है–

"अपने सभी टाबरों को यह आम पसंद है, मैं अकेले आम कैसे खा लूं.... अकेले कैसे? तू और मैं दो जन तो हैं... खाले।"[3]

परंतु वृध्दा अपने पोतों को छोड़कर आम खाना पसंद नहीं करती उनके पति कहते हैं कि घरवालों लिए आम लाया हूँ तुम यह आम खा लो किंतु बुढ़ियाँ नहीं खाती। इस प्रसंग से वृध्दों के दिल में परिवार के बच्चों के प्रति कितना स्नेह होता है। यह दृष्टिगोचर होता है।

'दादी और रिमोट' यह सूर्यबाला जी द्वारा लिखित गाँव से शहर लायी गई एक दादी की कहानी है। दादी गाँव से शहर आने पर वहां की चकाचौंद देखकर प्रसन्न हो जाती है। जो एक उंची इमारत की सातवीं मंजिल पर रहती है मानो उसे वहाँ पर लटका दिया गया हो।

वृध्दों की समस्याओं को लेकर इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता भी सजग दिखाई देती है। बहुत अधिक कविताएँ आज वृध्द विमर्श से संबोधित प्रकाशित हो रही हैं। हर एक माता–पिता का सपना होता है कि, हमारे बच्चें बड़े होकर समाज में इज्जत प्राप्त करें, खुद के पैरों पर खड़े होकर अपना नाम कमाएँ। इसके साथ ही उनकी और एक इच्छा होती है कि, हमारे बच्चें वृध्दावस्था में हमारी देखभाल भी करें। लेकिन वही बच्चें बड़े होकर अपनी माता–पिता की इज्जत नहीं करते हैं। कवि कुमारेंद्र जी अपनी वृध्दावस्था इस कविता में कहते हैं–

"कल तक जो थाम कर चले थे,
उंगली हमारी,
आज वो ही उँगली दिखा रहें हैं।"[4]

इस तरह माता–पिता ने अपने बच्चों को पाल–पोसकर बड़ा करते हैं लेकिन वही बच्चें माता–पिता को वृध्दावस्था में आँखें दिखाने लगते हैं। कई बार तो पीटने में भी हिचकिचाते नहीं हैं। वृध्द माता–पिता

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
January 2023 Special Issue 07 Volume III (A) SJIF Impact- 5.67

के अस्तित्व को ही नकारा जाता है। इसी कारण वृध्दों के जीने का कारण या वजह ही समाप्त हो जाती है। बहुत सारे घरों में वृध्द लोग एक कोने में हर समय पड़े रहते हैं। जैसे घर की कोई बेकार चीज एक कोने में रख दी हो जिसका परिवार में कोई महत्व नहीं है। वृध्दों के प्रति समाज का यही दृष्टिकोन बनता जा रहा है।

चित्रा मुद्गल द्वारा लिखित 'गिलिगड्डु' में सेवानिवृत्त सिविल इंजिनियर बाबू जसवंतसिंह और रिटायर्ड कर्नल विष्णु नारायण स्वामी इन दोनों की कथा है। दोनों एक दिन सैर करते समय अनायास ही मिल जाते हैं। एक–दूसरे के दुःख दर्द को बाटते हुए दोनों में घनिष्ट दोस्ती हो जाती है। कर्नल स्वामी अपने आदर्श परिवार की कथा सुनाते हैं लेकिन उनकी जिंदगी में सभी बातें ठीक इसके विपरित घटित होती हैं। उनके तीन बेटे हैं तीनों ही शादी के बाद उनसे अलग रहते हैं। उनकी प्रिय बहु अनुश्री अपनी डेढ़ साल की जुडवाँ बेटियों को छोड़कर अपने नृत्य गुरु के घर जा बैठती है। अपनी पोमियों को देखने के लिए उनसे मिलने के लिए उन्हें चोरी छिपे जाना पड़ता है। कर्नल की संपत्ति के लिए उनका मंझला बेटा नारायण उनसे झगड़ा तक करता है। हद तो तब होती है जब नारायण गुस्से में पागल होकर अपने पिताजी को पीट देता है। मार से लहुसुहान कर्नल जी अस्पताल में भर्ती हो जाते है। बोलने के काबील होने के बावजूद भी वे अपने बेटे के खिलाफ कोई भी किस दर्ज करने से साफ–साफ इंकार करा देते हैं। इस प्रसंग से यह नज़र आता है कि एक पिता अपने खून को पसीने में तपदील कर मेहनत से अपने बच्चों का लालन–पालन करता है, किंतु वही बच्चें संपत्ति के लिए अपने ही माता–पिता के जान पर उतर आते हैं। कर्नल की दर्दनाक मौत के बाद दाहा संस्कार के लिए बडे बेटे और पत्नी बैंगलोर से आते हैं। लेकिन अन्य दोनों बेटे अडचनों के चलते दाह संस्कार में उपस्थित नहीं हो पातें। बडा बेटा ही दाह संस्कार करता है, किंतु चौथ की क्रिया करने हेतु उसके पास समय नहीं होता इसीलिए वह वापस बैंगलोर लौट जाता है। बैंगलोर में अपने रिश्तोदारों के साथ ही वहा तेरहवी का कार्यक्रम संपन्न करता है। इसपर कर्नल की पड़ोसन मिसेज श्रीवास्तव कहती है, "ऐसी कसाई औलादों से तो आदमी निपुता भला। हमें इस बात का कोई गम नहीं कि, हमारी कोई अपनी औलाद नहीं।"[5]

वहाँ से लोटकर जसवंत सिंह नौकरानी सुनगुनिया के नाम पर अपने जीवन की वसीयत बदल ने का निश्चय करते हैं। और कानपुर वापस जाकर अपने जीवन का नया पड़ाव अपनी गिलिगड्डु कात्यायिनी कुमुदनी के साथ बिताना चाहते हैं। उनके मरणोपरांत उनके बेटों की आने की संभावना नहीं है। इसलिए वे अपनी वसीयत में यह भी जोड़ देते हैं कि, सुनगुनियें को लड़के रामरतन अभिषेक आसरे ही उनकी कपाल क्रिया करें। उसे ही वह अपने दाह संस्कार का अधिकार देते हैं। बाबू जसवंतसिंह आपने बेटे के पास तिरस्कृत होकर रहने के बजाय अपनी बुध्दि युक्ति एवं संपत्ति के बल पर अपने इच्छा नुसार जहां आदर, सम्मान, सेवा सुश्रुशा और ममत्व मिलता है वहाँ चले जाते हैं।

'दौड' उपन्यास के माध्यम से ममता कालिया जी ने युवा वर्ग की मानसिकता और संवेदनशून्यता की ओर संकेत किया है। उपभोगतावादी संस्कृति के बच्चें इतने दौड़ रहें हैं कि, उनके पास अपने रिश्तों को निभाने के लिए भी समय नहीं है। दौड़ उपन्यास के रेखा और राकेश बच्चों के नोकरी के लिए जाने के बाद एकदम अकेले हो जाते हैं। अकेलेपन और उदासी के कारण दोनों काफी व्यथित होते हैं। पवन अपनी पसंद के अनुसार स्टैला नामकी लडकी से विवाह करता है। जो कमाऊ और कैरियरिस्ट युवती है। विवाह के कुछ दिनों बाद ही वे काम के सिलसिले से अलग–अलग शहरों में रहते हैं। दोनों का दाम्पत्य जीवन इंटरनेट, ई–मेल, सर्फिंग में बीतता जाता है। राकेश और रेखा दोनों एक–दूसरे का सहारा बनकर इस भ्रम में रहते हैं कि बेटे कभी कभार वापस आकर उनका सहारा बनेंगे। वही दो दिन की जिंदगी वे जी भरकर जिएंगे। पीडा, ग्लानि, भय, निराशा, अकेलेपन को दूर करने के लिए व्यस्त रहने का प्रयास करते हैं जैसे घूमने जाना, गप्पे लड़ाना, रामचरित मानस पढ़ना आदि। परंतु सोनी साहब की मृत्यु और सघन का ताईवान के स्थानिक राजनीति में सक्रिय हो जाने से दोनों पूरी तरह से हील जाते हैं। पिताजी जब सघन को वापस बुलाते हैं, तो यह अपने पिताजी से पैसों का हिसाब माँगते हुए कहता है– "अपने इतने बरसों में क्या किया? दोनों बच्चों का खर्च आपके सिर से उठ गया। घूमने आप जाते नहीं, पिक्चर आप देखने नहीं, दारु आप पीते नहीं फिर आपके पैसे का क्या हुआँ।"[6] इस प्रकार अपने ही पिता को कटघरे में खड़ाकर सवाल पुछता है। एक बूढ़ा निर्धन बाप इसके क्या उत्तर दे सकता था। आखिर कार सघन ताईवान में ही रहने का फैसला कर लेता है तो यहां पर माता–पिता उसकी राह देखते रह जाते हैं। बेटे की चिंता और विरह की भावना की प्रचूरता ही इस उपन्यास का समापन है।

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
January 2023 Special Issue 07 Volume III (A) SJIF Impact- 5.67

इस प्रकार मैंने स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य के परिप्रेक्ष्य से वृध्दावस्था पर मेरी जानकारी अनुसार संक्षिप्त विचार–विमर्श करने का छोटासा प्रयत्न किया है। निष्कर्षः वृध्दावस्था पर हम कह सकते हैं कि वृध्दावस्था कोई समस्या नहीं है वह तो एक अवस्था है जिससे काल चक्र के अनुसार हर एक व्यक्ति गुजरना ही है। जरुरत है हमें इस अवस्था की मानसिकता को समझने की। जिसप्रकार माता–पिता अपने बच्चों का शिशुवस्था में खयाल रखते हैं। तो उन बच्चों को भी बड़े होने के बाद जब उनके माता–पिता वृध्द होते हैं तो उनका खयाल रखना आवश्यक है। इन वृध्दों का खयाल रखते समय युवा पीढ़ी को उनकी मानसिकता को भी ध्यान में रखना होगा क्योंकि कहते है नापचपन में बचपन होता है। "हम युवा पीढ़ी के लोग यदि वृध्दों का खयाल नहीं रखेंगे तो आनेवाली पीढ़ी भी हम से सरोकार नहीं रखेगी क्योंकि हम "जो बोएंगे वही तो पाएंगे।" इसी उम्मीद से सकता हूँ लेकिन जाते–जाते मन की बात– "कुर्सी पर बैठकर भरी जवानी में बुढ़ापे की बात करता हूँ, /कही वर्तमान भविष्य को खा न जाए, / इसलिए खुद ही खुद को टोकता हूँ।"

निष्कर्षत :–

हम कह सकते हैं कि हमने वर्तमान में पश्चिमी सभ्यता के अंधानुकरण के दौर में अपने जीवन की आवश्यकताओं बढ़ा लिया है जिनकी पूर्ति की होड़ लगी हुई है। जिस के कारण समाज में पीढीगत अंतर बढ़ता जा रहा है। पुरानी पीढ़ी को नई पीढ़ी से और नई पीढ़ी को पुरानी पीढ़ी से सामजंस्य बढ़ाना होगा, नही तो यह अंतर बढ़ता ही चला जाएगा। इस संदर्भ में चंद्रमौलेश्वर प्रसाद लिखते है, "बुढ़ापे को एक नई दृष्टि से देखने की आवश्यकता है, एक ऐसी दृष्टि से जिसमें संवेदना हो और बूढ़ों के लिए आदर व सम्मान का जीवन देने की आकांक्षा हो।"[7] हमें इस समस्या का हल निकालना होगा जिससे समाज में वृध्दों का सम्मान बढ़े न कि उन्हें बेकार समजा जाए। समाज को वृध्दों की उपयोगिता का दर्शन कराना होगा तब जाकर समाज का दृष्टिकोण बदलेगा। वृध्दों के ज्ञान एवं अनुभवों का नई पीढ़ी को लाभ उठाना चाहिए जिससे वह अपने भविष्य को सवार सकेंगे। इस दृष्टि सरकार, सामाजिक संगठनों, साहित्यकारों और समाज को एक जुट होकर प्रयास करना होगा। क्योंकि समाज का हर एक नवजवान एक ना एक दिन बुढ़ा होनेवाला है।

संदर्भ–

1. 'अनाधिकृत स्वप्न'– सत्यराज, वृध्दावस्था की कहानियाँ। सं– गिरिराजशरण, पृ.117
2. 'प्रतिनिधि कहानियाँ'– भगवतीचरण वर्मा राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1988, पृ. 67–68
3. 'आम का मौसम'– पुष्पपाल सिंह, अभिरुचि प्रकाशन दिल्ली, पृ.171
4- Kavira Sangrah. blogspot. in 2009/03/blog-post 08 html.
5. 'गिलिगड्डु उपन्यास– चित्रा मुद्गल, पृ.63
6. दौड़ उपन्यास– ममता कालिया, पृ.85
7. वृध्दावस्था विमर्श लेखक– चंदमौलेश्वर प्रसाद संपादक, ऋषभदेव शर्मा, परिलेख प्रकाशन, नजीबाबाद, प्रथम संस्करण 2016